गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में निरंतरता के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षक की तैयारी

रोमिला सोनी*

इसमें कुछ भी छुपा नहीं है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में काफ़ी परिवर्तन आया है। इक्कीसवीं शताब्दी में 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को सफलता के लिए आवश्यक कौशलों से परिपूर्ण करने के लिए क्या हमारे देश के प्री-स्कूल शिक्षक अथक परिश्रम कर रहे हैं? नर्सरी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों (एन.टी.टी.आई.) में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शिक्षक और विद्यार्थी-शिक्षक प्रारंभिक कक्षाओं के 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के साथ व्यवहार करने के लिए क्या आवश्यक सही शिक्षण पद्धतियों से अवगत हैं? पूर्व-प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में गुणवत्तापूर्ण जन बल तैयार करने और सुशिक्षित प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षाविदों को वहाँ बनाए रखने से संबंधित अनेक चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों से निपटना तब तक संभव नहीं है, जब तक सतत सेवाकालीन प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन न किया जाए, जिनका उद्देश्य यह मार्गदर्शन करना हो कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या को कैसे लागू किया जाए। आँगनवाड़ियों, प्ले स्कूलों, प्राथमिक स्कूलों और निजी स्कूलों से जुड़े प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में काम करने वाले हितधारकों की गुणवत्ता इस लेख का प्रमुख मुद्दा है। इस लेख में लेखिका ने बताया है कि गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गए पेशेवर विकास संबंधी प्रयास किस प्रकार अपना प्रभाव डालते हैं और प्री-स्कूल तथा पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों के कौशलों, नज़रिये और बच्चों के प्रति उनके व्यवहार में सार्थक परिवर्तन लाते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के विस्तारण एवं सुधार में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के जन बल की आधारभूत भूमिका है। अत: सभी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों, नियमित सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा वर्तमान एवं भविष्य के शिक्षकों के मददगारों, जो 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के साथ काम करते हैं, को एक नवीनतम गुणवत्तापूर्ण पाठ्यचर्या मुहैया कराने की आवश्यकता है। इस लेख में लेखिका ने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, प्री-स्कूल तथा ई.सी.ई (अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन) शब्दों का प्रयोग किया है।

औपचारिक शिक्षा में 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के नामांकन और सहभागिता के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाता है। इसका बच्चों के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है और यह प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देती

**सहायक प्राध्यापक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली – 110016

है। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में और विशेष रूप से मस्तिष्क पर हुए अनुसंधानों ने स्पष्ट रूप से यह कहा है कि जीवन के इन प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क में अंतर्ग्रंथीय संबंधों का निर्माण होता है।

यह जाना-माना तथ्य है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता उतनी ही अधिक हो सकती है, जितनी पढ़ाने वाले पूर्व-प्राथमिक विद्यालय शिक्षक की। पूर्व-प्राथमिक शिक्षक/शिक्षिका कितने योग्य हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने अपनी भूमिका या कार्य के लिए अपने आपको किस प्रकार तैयार किया है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) की निरंतरता बनाए रखने में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। तथापि यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है कि शिक्षकों को किस तरीके से बच्चों को संभालने के लिए तैयार किया जाए और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा को किस प्रकार पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में लागू किया जाए।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन और विभिन्न हितधारकों के बीच संबंध बनाए रखने में शिक्षक की मुख्य भूमिका होती है। ई.सी.ई. कार्यक्रम अनेक कारणों से प्रभावित होता है, जैसे — ई.सी.ई. कार्यक्रम की योजना बनाना, दाखिला करना और आकलन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होना आदि। प्रस्तुत लेख में विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्रों में कार्य करने वाले शिक्षकों की गुणवत्ता पर चर्चा की गई है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा स्तर पर 'कोई भी पढ़ा सकता है' और 'कोई भी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा स्तर के बच्चों को संभाल सकता है' वाला नज़रिया ही शिक्षकों की गुणवत्ता को बाधित करने का सबसे बड़ा कारण है। अनेक व्यक्ति या संस्थान इसके प्रत्युत्तर में कहते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में कोई निश्चित पाठ्यचर्या तो होती नहीं है, अत: कोई भी व्यक्ति शिक्षक हो सकता है। इसी का परिणाम है कि कम योग्यता प्राप्त शिक्षक भी बिना किसी ई.सी.ई. योजना के पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र चलाते हैं। प्रत्येक बच्चे के सीखने के लिए ई.सी.ई. ही प्रथम सीढ़ी और बुनियादी कदम होती है, लेकिन प्रशासनिक और अन्य वित्तीय कारणों से इस अवस्था को अनिवार्य अवस्था का आधिकारिक दर्जा नहीं दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप ई.सी.ई. के क्रियान्वयन में अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए संस्था/विद्यालय आधारित नीतियाँ ही काम कर रही हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के मार्ग में दूसरा बाधक तत्व है — 'ई.सी.ई. शिक्षकों के लिए तेज़ी से उभरते प्रशिक्षण संस्थान' जो इस कार्यक्रम की अपेक्षाओं को पूरा किए बिना प्रशिक्षण दे रहे हैं। भावी शिक्षकों के लिए बनाई गई प्रशिक्षण पाठ्यचर्या उस निर्माण स्तर पर ज़मीनी वास्तविकताओं से मेल ही नहीं खाती, जहाँ इन शिक्षकों को कार्य करना होता है। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केन्द्रों में शिक्षकों की नियुक्ति एक दूसरा संदेहास्पद विषय है — शिक्षकों की नियुक्ति के लिए स्पष्ट नीति के अभाव में या तो अयोग्य या आवश्यकता से अधिक पेशेवर योग्यता वाले (बी.एड./एम.एड./पी.एच.डी.) शिक्षक नियुक्त कर लिए जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप कक्षा में

बच्चों की आयु के अनुसार उपयुक्त बातचीत तथा गतिविधियाँ नहीं हो पातीं। सेवा-पूर्व ई.सी.ई. पाठ्यचर्या शिक्षकों की आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर रही है, क्योंकि विद्यालयी शृंखला में ई.सी.ई. के ऐच्छिक होने के कारण पाठ्यचर्या की समीक्षा और संशोधन को महत्व नहीं दिया जाता। विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रशिक्षकों (टीचर एजुकेटर) का भी अपने पेशेवर और शैक्षिक कौशलों का विकास करने के लिए नियमित उन्मुखीकरण नहीं होता है। ई.सी.ई. शिक्षकों की कार्यावधि भी शिक्षकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

इस लेख में लेखिका ने कुछ पहलुओं पर चर्चा की है, जैसे — शिक्षा प्रणाली की शृंखला के पहले कदम के रूप में अच्छी गुणवत्तापूर्ण ई.सी.ई. को उसकी विशिष्ट भूमिका तथा शिक्षा में निरंतर विकास के लिए संसाधन के रूप में कैसे देखा जा सकता है। इस लेख के उद्देश्य हैं —

1. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा अवस्था में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों के संवर्द्धन के लिए तरीके सुझाना।
2. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित मसलों और मुद्दों पर चर्चा करना।

ई.सी.ई. शिक्षकों की सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा और सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा उनका पेशेवर विकास

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के लिए सभी शिक्षकों का ई.सी.ई. और 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को सँभालने व देखभाल में पेशेवर प्रशिक्षण होना चाहिए। कई राज्य और केंद्र प्रशासित प्रदेश ऐसे हैं, जहाँ शिक्षकों के सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए ई.सी.ई. प्रशिक्षण संस्थानों और पाठ्यचर्या का अभाव है जिसके कारण प्रारंभिक कक्षाओं में ई.सी.ई. पाठ्यचर्या के प्रभावशाली क्रियान्वयन में बाधा पड़ती है। ई.सी.ई. के लिए शिक्षक प्रशिक्षण का ऐसा प्रारूप बनाने की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षक संवेदीकरण को अधिक प्राथमिकता मिले। यह ई.सी.ई. पाठ्यचर्या के प्रभावशाली क्रियान्वयन और बच्चों के अनुकूल आकलन प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक शर्त है। केवल शिक्षक ही नहीं, बल्कि विभिन्न स्तरों पर कार्य करने वाले पदाधिकारियों को भी ई.सी.ई. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन में अंतर्वेशन के मूल्य को ग्रहण करना होगा।

इस क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी लोग और संस्थान इस बात से सहमत हैं कि ई.सी.ई. शिक्षक बनने के लिए बाल विकास तथा ई.सी.ई. का मूलभूत ज्ञान अनिवार्य है। इसके अंतर्गत ई.सी.ई. क्षेत्र के इतिहास का ज्ञान, ई.सी.ई. क्षेत्र में काम करने वाले संस्थान, शिक्षकों की श्रेणियों (आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, 3–6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को संभालने वाले ई.सी.ई. शिक्षक) और स्वयं बच्चे का ज्ञान शामिल है। इस ज्ञान को बच्चों की आयु व विकास के आधार पर उपयुक्त खेल आधारित ई.सी.ई. पाठ्यचर्या, भौतिक और सामाजिक संसाधनों को सुनियोजित करने के तरीकों और सबसे अधिक शिक्षण को प्रारंभिक कक्षाओं की क्रियाओं के साथ समेकित करना ज़रूरी है। ई.सी.ई. की तैयारी के लिए दोनों क्षेत्रों — सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों — की

ओर ध्यान देना आवश्यक है। सेवा-पूर्व प्रशिक्षण के लिए ई.सी.ई. शिक्षाविदों को विषय-वस्तु और शिक्षण विधि, दोनों का पूर्व ज्ञान और समझ होनी चाहिए। तभी वे आगे विद्यार्थी-शिक्षकों को, जो ई.सी.ई. शिक्षक बनने वाले हैं और 3 – 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को संभालने के लिए ज़िम्मेदार बनने वाले हैं, शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा के लिए आधारभूत ज्ञान से आगे भी कुछ करना ज़रूरी है, क्योंकि उन्हें ऐसे 3 – 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के साथ कार्य करना है, जिनके सीखने के तरीकों और बाल विकास में भिन्नता होती है। किसी भी स्तर पर शिक्षण की तैयारी एक लंबी प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति के पूरे सेवाकाल में चलती रहनी चाहिए। विशेषज्ञों के लिए यह विचारणीय बात है कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शिक्षक-शिक्षा/प्रशिक्षण संस्थान के ई.सी.ई. शिक्षक/प्रशिक्षकों के सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण के शिक्षण मानकों को ऊँचा उठाया जाए। सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए ई. सी.ई. के सीखने के माहौल और प्रारंभिक कक्षा प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए केवल शिक्षकों पर निर्भर रहना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि पूरी प्रणाली को प्रेरित करने की आवश्यकता होगी। ई.सी.ई. शिक्षकों के पेशेवर विकास का उद्देश्य ज्ञान, कौशल और रुचियों को आगे बढ़ाना है तथा 3 – 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को पढ़ाने व उनके माता-पिता तथा परिवारों की मदद करने के प्रयासों में उनके कार्यों में वृद्धि करना है। इससे व्यक्तियों और संस्थानों में चल रही पेशेवर विकास की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम

सेवा-पूर्व शिक्षकों की तैयारी के लिए ई.सी.ई. शिक्षक संस्थानों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि भावी ई.सी.ई. शिक्षकों को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने वाले शिक्षाविद् अपने विषय में पूर्णतया योग्य हों ताकि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शिक्षक शिक्षा संस्थानों से निकलने वाले शिक्षक भी सुप्रशिक्षित, ज्ञान व विश्वास से परिपूर्ण हों। ई.सी.ई. में सेवा-पूर्व कार्यक्रमों को समझने के लिए बहुत कम अध्ययन हुए हैं। विद्यार्थी-शिक्षक समेकित कक्षाएँ किस प्रकार संभालें, कार्यक्रम में यह शामिल किया जाना ज़रूरी है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए शिक्षकों की तैयारी पर अंबेडकर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया अध्ययन (2015) स्पष्ट रूप से राज्यों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शिक्षक शिक्षा संस्थानों की स्थिति पर प्रकाश डालता है। कुछ राज्यों विशेषकर उत्तरी और उत्तर पूर्वी राज्यों में तो शिक्षक शिक्षा संस्थानों तक कोई पहुँच ही नहीं है। कुछ राज्यों, जैसे — महाराष्ट्र और गुजरात जहाँ पहले बड़ी संख्या में ई.सी.ई. शिक्षक संस्थान थे, वहाँ भी माँग की कमी के कारण इनकी संख्या कम होती जा रही है। सभी ई.सी.ई. शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी पाठ्यचर्या, कोर्स डिज़ाइन का पुनरवलोकन कर तथा उसे अधिक व्यावहारिक बनाकर स्वयं में पूरी तरह बदलाव लाएँ, तभी प्रभावशाली और सुप्रशिक्षित शिक्षक तैयार हो सकेंगे।

सेवा-पूर्व ई.सी.ई. शिक्षक कार्यक्रमों के प्रमुख मुद्दे व समस्याएँ

- विद्यार्थी-शिक्षकों को सैद्धान्तिक ज्ञान को वास्तविक कक्षा स्थितियों में क्रियान्वित करने में कठिनाई होती है।
- अनभिज्ञ होने के कारण विद्यार्थी-शिक्षक आमतौर पर बच्चों के साथ व्यवहार करते समय व्यग्र हो जाते हैं और ई.सी.ई. पाठ्यचर्या छोड़कर चले जाते हैं।
- अधिकांश ई.सी.ई. शिक्षाविद् आधुनिक और नए घटनाक्रमों या सुधारों से परिचित नहीं होते।
- ई.सी.ई. पाठ्यचर्या का समेकन और अद्यतन नहीं होता।
- ई.सी.ई. में जो पढ़ाया जाता है, वह प्रारंभिक कक्षाओं में होने वाले व्यवहार से भिन्न होता है।
- ज्ञान के उच्च संस्थानों, जैसे — विश्वविद्यालय आदि की ई.सी.ई. शिक्षक शिक्षा में अल्प सहभागिता।

सेवा-पूर्व ई.सी.ई. शिक्षक संस्थानों के लिए सुझाव

- नियमित रूप से ई.सी.ई. पाठ्यचर्या की समीक्षा करना।
- तंत्रिका विज्ञान में सामयिक शोध, शिक्षण में रचनावादी दृष्टिकोण, सामाजिक तत्परता एवं उद्गामी साक्षरता के महत्व, सामाजिक समावेशन आदि के संदर्भ में ज्ञान को अद्यतन बनाना।
- पाठ्यचर्या की संरचना लचीली हो, जिसमें शिक्षाविदों के लिए यह प्रावधान हो कि वे आवश्यकता और संदर्भ अनुसार अपनी पाठ्यचर्या स्वयं विकसित या अनुकूलित कर सकें।
- सभी बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चुनी हुई और संवेदनशील कार्यनीतियाँ।
- उपयोगकर्ताओं के लिए स्पष्ट एवं व्यापक ई.सी.ई. पाठ्यचर्या दिशा-निर्देश।
- ई.सी.ई. में ठोस शैक्षणिक सिद्धांतों वाले सुप्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षक शिक्षाविद्।
- भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए ई.सी.ई. शिक्षक शिक्षाविदों के लिए पेशेवर विकास के व्यापक कार्यक्रम।
- व्यवहार और सिद्धांत में मेल हो ताकि विद्यार्थी-शिक्षकों को 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के विकास और शिक्षा में मदद मिल सके।
- ई.सी.ई. को शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की सीमा में लाने के लिए सरकार द्वारा पहल करने की आवश्यकता है।

सेवाकालीन ई.सी.ई. शिक्षक कार्यक्रम

सेवाकालीन कार्यक्रमों में संसाधन सामग्री के साथ कार्य करना, ई.सी.ई. के सत्रों में उपस्थित रहना, 'यू ट्यूब' एवं अन्य आई.सी.टी. संसाधनों पर शिक्षण पद्धतियों और कार्यप्रणालियों पर फ़िल्म देखना, ई.सी.ई. अध्ययन समूह का निर्माण करना या अधिक अनुभवी शिक्षकों का अवलोकन करना आदि शामिल हो सकते हैं। ई.सी.ई. कार्यशालाओं का आयोजन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि शिक्षक क्या जानना चाहते हैं और वे कहाँ और किन कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

सभी शिक्षकों को अपनी क्षमताओं और आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए आत्म-विश्लेषण करना चाहिए। इससे

उन्हें स्वयं अपनी सेवाकालीन उपचारात्मक गतिविधियाँ विकसित करने में सहायता मिलेगी। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केन्द्रों को उपचारात्मक कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए और विशेषज्ञों को बुलाना चाहिए।

सेवाकालीन कार्यशालाएँ आयोजित करते समय शिक्षकों की रुचियों और आवश्यकताओं को आँकना बहुत ज़रूरी है। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केन्द्रों को चाहिए कि वे शिक्षकों को कक्षा अधिगम से संबंधित समस्याओं पर खुलकर चर्चा करने की स्वतंत्रता दें। इससे शिक्षकों की प्रतिपुष्टि प्राप्त करने में बहुत सहायता मिलेगी। लगातार निरीक्षण और प्रतिपुष्टि के अभाव में कोई भी सेवाकालीन प्रशिक्षण सफल नहीं हो सकता। निरीक्षकों या अधिकारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण का मूल्यांकन करते रहना चाहिए, तभी होने वाला सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा कर पाएगा और उनकी उपस्थिति सार्थक हो सकेगी।

सेवाकालीन कार्यक्रमों के प्रमुख मुद्दे व समस्याएँ

- यद्यपि ई.सी.ई. शिक्षकों का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है, तथापि उन्हें एक व्यावसायिक होने का सम्मानजनक ऊँचा दर्जा नहीं मिलता।
- विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में जो पढ़ते हैं और इंटर्नशिप के दौरान जो अभ्यास/प्रैक्टिस करते हैं, उसमें मेल न होना।
- ई.सी.ई. संस्थानों की कोई नवीन (अद्यतनीकृत) पाठ्यचर्या न होना।
- प्रारंभिक कक्षाओं में सही ढंग से कार्य करने के लिए बड़ी मात्रा में व्यावहारिक ज्ञान का अभाव।

सेवाकालीन ई.सी.ई. कार्यक्रम के लिए सुझाव

- सभी शिक्षकों के मज़बूत और कमज़ोर पक्ष होते हैं। मज़बूत पक्षों को और आगे बढ़ाया जा सकता है और कमज़ोरियों पर पेशेवर विकास कार्यक्रम द्वारा काबू किया जा सकता है।
- शिक्षकों में सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करने के प्रयासों की आवश्यकता है ताकि वे बच्चों के लिए अपनी चिंताओं को साझा कर सकें। सकारात्मक आत्म-अवधारणा एक सकारात्मक विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्र का वातावरण बनाने में शिक्षक की सहायता करती है।
- शिक्षकों को ज्ञान और कौशलों में वृद्धि करने के लिए सूचना के विभिन्न स्रोतों को तलाशना चाहिए।
- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा/ई.सी.ई. केंद्रों को अपनी आय का कुछ अंश किसी भी रूप में कर्मचारियों के विकास में लगाना चाहिए।
- विद्यालय-पूर्व शिक्षा केन्द्रों को अपनी आवश्यकतानुसार अपने-अपने सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, दूसरे संस्थान गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सहायता के लिए पेशेवर संगठनों पर निर्भर कर सकते हैं जो उन्हें कार्यशालाओं/सम्मेलनों/पत्रिकाओं या अन्य प्रकाशित सामग्री के रूप में मिल सकती है।
- कुछ विद्यालय अपने शिक्षकों का नामांकन अल्पावधि ई.सी.ई. कोर्स में कराते हैं ताकि उनके विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्र भली प्रकार प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकें।

- विद्यालय चाहे कर्मचारियों के पेशेवर विकास के लिए साधन उपलब्ध कराएँ या नहीं, प्री-स्कूल शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास के लिए स्वयं उत्तरदायी होना चाहिए। शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यशालाओं में स्वयं को व्यस्त रख सकते हैं, अपनी अनौपचारिक शिक्षा जारी रख सकते हैं और स्वयं को ई.सी.ई. में अद्यतन रख सकते हैं।
- शिक्षक भर्ती प्रक्रिया सही मायने में निष्पक्ष होनी चाहिए।
- अभिभावकों और समुदाय को परिवर्तन की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनाना होगा।
- राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2013 के अनुसार परिकल्पित ई.सी.ई. पाठ्यचर्या के मुद्दे और आकलन प्रक्रिया में अपेक्षित परिवर्तन आशाजनक है और शैक्षणिक तथा प्रशासनिक कामकाज के सभी स्तरों पर उन्हें एक नयी दृष्टि की आवश्यकता है। समेकित और बाल-केंद्रित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने और पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं को पूरा करने के प्रयास करने की ज़रूरत है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्रणाली के लिए सुझाई गई योजनाओं के निहितार्थ

सभी विद्यालयों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र स्तर पर दाखिला

शिक्षा का अधिकार अधिनियम में पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ चलाने वाले गैर सहायता-प्राप्त निजी विद्यालयों में विद्यालय-पूर्व शिक्षा स्तर पर 25 प्रतिशत दाखिले का प्रावधान किया गया है। इस माँग की पूर्ति के लिए प्रशिक्षित नर्सरी शिक्षकों की आवश्यकता है, अन्यथा अप्रशिक्षित या उच्च कक्षाओं के लिए प्रशिक्षित शिक्षक (बी.एड.) द्वारा विद्यालय-पूर्व शिक्षा की कक्षाएँ पढ़ाए जाने का सिलसिला जारी रहेगा। इस प्रकार के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध करानी होगी, वरना यथास्थिति बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त, शिक्षा का अधिकार अधिनियम में कहा गया है कि 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करने के लिए राज्य ई.सी.ई. केंद्र खोल सकते हैं। सीखने और जीवन की नींव के महत्वपूर्ण घटक होने के कारण, विशेष रूप से समाज के कमज़ोर और वंचित वर्गों के बच्चों के लिए, राज्यों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे ई.सी.ई. शिक्षा को अनिवार्य बनाएँ। इसके लिए उच्च स्तरीय निर्णय लिए जाने आवश्यक हैं।

गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सामान्य दिशानिर्देश

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा विकसित राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2013, प्रारंभिक शिक्षा व्यवहार के निर्देश देती है, किंतु क्या सभी विद्यालय-पूर्व शिक्षा या विद्यालय इसके बारे में जानते हैं? जब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा ई.सी.सी.ई., 2013 क्रियान्वित करने की बात आती है तो आश्चर्य होता है कि अभी भी यह ज़मीनी स्तर तक नहीं पहुँच पाया है। मुश्किल से यह सरकारी विद्यालय-पूर्व शिक्षा शिक्षकों तक पहुँचा है, निजी क्षेत्र तो इससे बिलकुल अनजान हैं। यदि वे कुछ जानते भी हैं तो क्या वे यह जानते हैं कि इसे प्रारंभिक कक्षाओं तक कैसे पहुँचाया जाए। हमें

अभी भी विश्वविद्यालय आधारित पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों को विद्यालय-पूर्व शिक्षा शिक्षकों और प्राथमिक शिक्षकों के कार्यक्रमों से एकीकृत करने की ज़रूरत है। शिक्षकों की चिंता का केवल एक विषय है कि विद्यालय-पूर्व शिक्षा में 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को 'क्या' सीखना है। किंतु सबसे महत्वपूर्ण बात तो 'शिक्षण विधि' है, यानी कक्षाओं में शिक्षक पाठ्यचर्या को 'कैसे' सिखा रहे हैं। इसका अर्थ है कि विद्यालय-पूर्व शिक्षा शिक्षकों को 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की रुचियों की दिशा में ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है, न कि इस ओर कि बच्चों को ठीक-ठीक कितनी विषय-वस्तु पढ़ानी है।

शिक्षकों की सकारात्मक आत्म-छवि

पेशेवर विकास सभी प्रकार की गतिविधियों पर आधारित होता है, जो ज्ञानाधार, कौशल समूह या प्रयोग किए गए व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ाने का प्रयास करता है, जैसे — एक शिक्षक प्री-स्कूल शिक्षा और किंडरगार्डन से तीसरी कक्षा तक के शिक्षण या शैक्षणिक सहायता आदि सेवाओं में व्यस्त रहता है। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्र के शिक्षकों के लिए आवश्यक व्यक्तिगत गुणों की सूची बनाई जा सकती है, परंतु सबसे महत्वपूर्ण गुण है शिक्षक का बच्चों को पसंद करना और उनका आदर करना। यदि शिक्षक बच्चों को पसंद करता है तो और भी लाभकारी गुण उसके व्यक्तिगत दर्शन के अंग बन जाएँगे। बच्चों को प्यार करने और आदर करने वाला ई.सी.ई. शिक्षक एक ऐसा व्यक्ति बन जाएगा जो धीर, सहनशील और स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और योग्यता की भावनाओं के प्रति उत्सुक होगा। यदि शिक्षक को यह जानना है कि बच्चे कब किसी विशिष्ट अनुभव के लिए तैयार होते हैं, तो उसके लिए विकास के तरीकों और विकास की अवस्थाओं के मूल्यांकन के तरीकों का ठोस ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

स्वयं शिक्षक की इस पेशे में रुचि

तीन से छह वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के साथ काम करने वाले व्यक्ति को अपनी सोच और व्यवहार में अनुकूलनीय और लचीला होना चाहिए। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्र की मुश्किलों का सामना करने की योग्यता प्राप्त करना आसान नहीं है। यदि शिक्षक की सोच बच्चों, उनके अभिभावकों और अपने काम को पसंद करने पर आधारित है, तो शिक्षक को अपेक्षाकृत तनावमुक्त और स्वीकारने के रवैये को अपनाना सरल होगा, क्योंकि 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के साथ काम करने के लिए यह अति आवश्यक है। इसका अर्थ यह नहीं कि बच्चों को उनके सभी कामों में खुली छूट दे दी जाए।

बच्चों के साथ पेशेवर रूप से काम करने वाले शिक्षक भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं। बाल विकास और मार्गदर्शन के ज्ञान में विभिन्न क्षेत्रों के तथ्य शामिल होते हैं। इनमें से कुछ क्षेत्र हैं — मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, चिकित्साशास्त्र आदि। इसके अतिरिक्त उत्कृष्ट कार्यकर्ता जिनकी पहले किसी दूसरे क्षेत्र में विशेष रुचि थी, वे कहते हैं कि बच्चों के पालन-पोषण के विकसित तरीकों का विशेष महत्व है।

निष्कर्ष

प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता मुख्य रूप से पूर्व-प्राथमिक विद्यालय/केंद्र में होने वाले शिक्षण-अधिगम पर निर्भर करती है। विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्रों और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में मिलने वाली व्यवस्थित सहायता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। मेरे विचार में यदि उपरोक्त चर्चित मुद्दों और चुनौतियों का समाधान नहीं किया जाता है तो इससे सेवा-पूर्व विद्यार्थी-शिक्षकों का विश्वास कम हो सकता है और उनके पढ़ाने और सीखने की योग्यता में रुकावट आ सकती है। यदि शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों की धारणाओं में परिवर्तन लाना है, तो उन्हें बेहतर रूप से तैयार होने की ज़िम्मेदारी का आश्वासन स्वयं देना चाहिए। तभी शिक्षक तैयारी अर्थपूर्ण, संतोषजनक और अधिक व्यावहारिक हो सकती है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सबसे पहला महत्वपूर्ण कदम होगा कि सभी बच्चों के लिए विद्यालय-पूर्व शिक्षा अवस्था को अनिवार्य कर दिया जाए। दूसरे, सभी प्रशिक्षण संस्थानों की सुचारु रूप से मॉनिटरिंग की व्यवस्था हो। तीसरे, सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों को अलग-अलग न देखकर एकल रूप में देखा जाए ताकि विद्यालय स्तर पर सिद्धांत और व्यवहार के बीच के अंतर को कम किया जा सके। शिक्षक शिक्षाविदों की पेशेवर प्रतिष्ठा पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है, उन्हें पाठ्यचर्या निर्माण और अन्य कार्यशालाओं में शामिल किया जाए। गुणवत्तापूर्ण ई.सी.ई. के सपने को साकार करने के लिए विद्यालय-पूर्व शिक्षा केंद्रों के शिक्षकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है ताकि संपूर्ण प्रणाली को सुधारा जा सके।

संदर्भ

अंबेडकर यूनिवर्सिटी. 2015. *प्रिपेयरिंग टीचर्स फ़ॉर अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन*. अंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली एंड नेशनल काउंसिल फ़ॉर टीचर एजुकेशन, दिल्ली. पृ. 25–86.

बनार्ड स्पोदेक, डेविस साराशो, 1981. *फाउंडेशंस ऑफ़ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन—टीचिंग थ्री, फ़ॉर एंड फ़ाइव ईयर ओल्ड चिल्ड्रन टूवर्ड्स प्रोफ़ेशनलिज़्म*. प्रेंटिस हॉल, इंगलीवुड क्लिफ़्स, न्यू जर्सी.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. *राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2013*. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शैरिडयन एम सूसेन, एडवर्ड्स, मार्विन ए क्रिस्टीन और नौशे एल. लिज़ा. 2009. *प्रोफ़ेशनल डेवलपमेंट इन अर्ली चाइल्डहुड प्रोग्राम्स—प्रोसेस, इश्यूज़ एंड रिसर्च नीड्स*.